अष्ठम अध्याय

ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर परियोजनाओं के प्रभावों का मूल्यांकन

8.1 कृषि-परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव

8.2 लघु-सिंचाई परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव

8.3 पशुपालन परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव

8.4 कुटीर-उद्योग परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव

8.5 सेवा एवं व्यवसाय परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव

ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर परियोजनाओं के प्रभावों का मूल्यांकन

जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में चयनित 400 लाभार्थियों की आय, उपभोग-व्यय एवं बचतों का अध्ययन पिछले अध्यायों में विस्तार पूर्वक किया गया है जिससे यह निष्कर्ष निकल कर सामने आता है कि परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात सभी लाभार्थियों के उपभोग-व्ययों में वृद्धि हुई जबकि आय-स्तर में केवल 80.75% लाभार्थी ही वृद्धि कर पाये हैं। जहाँ तक बचत का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में केवल यही कहा जा सकता है कि निम्न आय-वर्ग के लाभार्थियों को छोड़कर लगभग सभी लाभार्थियों की बचतें कम अथवा समाप्त हुई हैं।

प्रस्तुत अध्याय में यह पता लगाने का प्रयत्न किया गया है कि लाभार्थियों की आय तथा उपभोग-व्ययों पर विभिन्न परियोजनाओं का क्या प्रभाव पड़ा है तथा किस परियोजना से उनका जीवन-स्तर किस प्रकार प्रभावित हुआ है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये लाभार्थियों द्वारा चयनित कुल परियोजनाओं को सुविधा की दृष्टि से पाँच भागों—कृषि-परियोजना, लघु-सिंचाई परियोजना, पशुपालन परियोजना, कुटीर-उद्योग परियोजना तथा सेवा एवं व्यवसाय परियोजना में विभाजित करके, अलग-अलग रूप से लाभार्थियों की आय-स्तर, उपभोग-स्तर, एवं बचत-स्तर पर उनके प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है।

8.1 जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में कृषि-परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का विश्लेषण

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में कृषि-परियोजना का लाभार्थियों की आय, उपभोग-व्ययों एवं बचतों पर प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण अग्र तालिका संख्या 8.1 के माध्यम से विस्तारपूर्वक किया गया है—

तालिका संख्या—8.1

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में कृषि-परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन

लाभार्थियों की संख्या	आय-स्तर पर प्रभाव				उपभोग-स्तर पर प्रभाव				बचत-स्तर पर प्रभाव			
	1 (अ)	1 (ब)	1 (स)	1 (द)	2 (अ)	2 (ब)	2 (स)	2 (द)	3 (अ)	3 (ब)	3 (स)	3 (द)
2	1250	1598	348	27.84	1176	1271	95	8.08	74	327	253	341.89
8	1750	1696	–54	–3.09	1672	1790	118	7.06	78	–94	–172	–220.51
9	2250	1878	–372	–16.53	2050	2205	155	7.56	200	–327	–527	–263.50
8	2750	2534	–216	–7.85	2372	2584	212	8.94	378	–50	–428	–113.23
6	3250	2954	–296	–9.11	2945	3133	188	6.38	305	–179	–484	–158.69

स्रोत—उपरोक्त तालिका जनपद मेरठ के दोनों विकास खण्डों में चयनित लाभार्थियों से किये गये साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों के आधार पर तैयार की गयी है।

नोट—संकेतक्षरों का स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है—

1 (अ) परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व लाभार्थियों की मासिक औसत आय।
(ब) परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् लाभार्थियों की मासिक औसत आय।
(स) परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् लाभार्थियों की मासिक औसत आय में अन्तर।
(द) मासिक औसत आय का अन्तर प्रतिशत में।

2 (अ) परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व लाभार्थियों के मासिक औसत उपभोग-व्यय।
(ब) परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् लाभार्थियों के मासिक औसत उपभोग-व्यय।
(स) परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् लाभार्थियों के मासिक औसत उपभोग-व्ययों में अन्तर।
(द) मासिक औसत उपभोग-व्ययों का अन्तर प्रतिशत में।

3 (अ) परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व लाभार्थियों की मासिक औसत-बचत।
(ब) परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त लाभार्थियों की मासिक औसत-बचत।
(स) परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त लाभार्थियों की मासिक औसत-बचत में अन्तर।
(द) मासिक औसत-बचत का अन्तर प्रतिशत में।

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से पता चलता है कि जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्ड़ों में कुल 33 लाभार्थियों ने कृषि-परियोजना में भाग लिया जिनमें से 2 लाभार्थियों की आय में औसतन रूप से 27.84% की वृद्धि तथा 31 लाभार्थियों की आय में 3.09% से 16.53% तक की कमी आयी। अपनी आय में वृद्धि निम्न आय-वर्ग वाले लाभार्थी ही कर पाये जिसके मुख्य कारण उनकी पहले से ही आय काफी कम होने के कारण आय-वृद्धि की सम्भावनायें अधिक होना तथा उनका परियोजना के प्रति पूर्ण समर्पण माने जा सकते हैं।

इस परियोजना से जुड़े 8 लाभार्थी ऐसे पाये गये जिनकी आय में 3.09% की कमी आयी। ये लाभार्थी 1750 रुपये मासिक औसत आय वाले थे। इसके अतिरिक्त 9 लाभार्थियों, जो कि 2250 रुपये मासिक औसत आय वाले थे, की आय में परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् 16.53% की कमी दर्ज की गई। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मध्यम आय-वर्ग के लाभार्थियों की मासिक औसत आय में सर्वाधिक कमी आयी जिसका मुख्य कारण परियोजना में मिली सहायता का उनके द्वारा दुरुपयोग किया जाना तथा कुछ मामलों में सहायता सामग्री की गुणवत्ता में कमी भी रहा है। निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि कृषि परियोजना से मात्र 6.06% लाभार्थी ही अपनी आय बढ़ाने में सफल रहे जबकि 93.94% लाभार्थियों की आय का ग्राफ नीचे की ओर ही आया है।

उपरोक्त परियोजना का लाभार्थियों के उपभोग-स्तर पर प्रभाव का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि इस परियोजना में सम्मिलित सभी 33 लाभार्थियों के उपभोग-व्ययों में 6.38% से 8.94% तक की वृद्धि हुई है। उपभोग-व्ययों में होने वाली यह वृद्धि इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि यह उनके उपभोग-व्ययों पर मूल्य-स्तरों में होने वाली वृद्धि का प्रभाव मात्र है तथा उनका उपभोग-स्तर इस परियोजना के प्रभाव से पूर्णतः अवमुक्त रहा है।

जहाँ तक बचत-स्तर पर कृषि-परियोजना के प्रभाव का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि इस परियोजना से सम्बन्धित कुल 33 लाभार्थियों में से केवल 2 लाभार्थियों की मासिक औसत-बचत में 253 रुपये अर्थात् 341.89% की वृद्धि हुई जबकि शेष 31 लाभार्थियों की मासिक औसत-बचत में भारी कमी आयी है। मासिक औसत-बचत में न्यूनतम कमी 113.23% तथा अधिकतम कमी 263.50% दर्ज की गई। लाभार्थियों की मासिक औसत-बचत में इस भारी कमी का कारण परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त उनकी आयों में कमी तथा उपभोग-व्ययों में वृद्धि रहा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कृषि-परियोजना से सम्बन्धित केवल 2 (6.06%) लाभार्थी ही ऐसे पाये गये जिनके जीवन-स्तर पर अनुकूल प्रभाव रहा तथा उनकी ऋण-भुगतान क्षमता में भी पर्याप्त वृद्धि हुई। इसके विपरीत 31 (93.94%) लाभार्थियों के जीवन-स्तर पर इस परियोजना का विपरीत प्रभाव ही देखने को मिला। इन लाभार्थियों का जीवन-स्तर तो इतनी बुरी तरह प्रभावित हुआ कि जहाँ एक ओर परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व उनकी बचत धनात्मक थी, वह ऋणात्मक-स्तर पर पहुँच गई। अत: उनकी ऋण-भुगतान क्षमता भी शून्य हो गई।

8.2 जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में लघु-सिंचाई परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का विश्लेषण

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में लघु-सिंचाई परियोजना का लाभार्थियों की आय, उपभोग-व्यय एवं बचतों पर प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण अग्र तालिका संख्या 8.2 में विस्तार पूर्वक किया गया है—

तालिका संख्या—8.2

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में लघु-सिंचाई परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन

लाभार्थियों की संख्या	आय-स्तर पर प्रभाव				उपभोग-स्तर पर प्रभाव				बचत-स्तर पर प्रभाव			
	1 (अ)	1 (ब)	1 (स)	1 (द)	2 (अ)	2 (ब)	2 (स)	2 (द)	3 (अ)	3 (ब)	3 (स)	3 (द)
6	1750	1672	–78	–4.46	1672	1764	92	5.50	78	–92	–170	–217.95
3	2250	1838	–412	–18.31	2050	2182	132	6.44	200	–344	-544	–272.00
2	2750	2525	–225	–8.18	2372	2567	195	8.22	378	–42	–420	–111.11

स्रोत—उपरोक्त तालिका जनपद मेरठ के दोनों विकास खण्डों में चयनित लाभार्थियों से किये गये साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों के आधार पर तैयार की गई है।
नोट—संकेताक्षरों का विवरण तालिका संख्या 8.1 में दिया गया है।

उपरोक्त तालिका के अध्ययन एवं विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में लघु-सिंचाई परियोजना में केवल 11 लाभार्थियों ने अपनी रुचि का प्रदर्शन किया। इस परियोजना में इतने कम लाभार्थियों के भाग लेने का मुख्य कारण इस परियोजना की लागत का अधिक होना तथा सरकार द्वारा सहायता का कम प्रदान किया जाना रहा है। लघु-सिंचाई परियोजना के सम्बन्ध में यह बात मुख्य रूप से नोट की गई कि इससे सम्बन्धित सभी 11 लाभार्थियों की आय पहले की अपेक्षा कम हुई है। 6 लाभार्थियों की आय में 4.46% की कमी, 3 लाभार्थियों की आय में 18.31% की कमी तथा 2 लाभार्थियों की आय में 8.18% की कमी दर्ज की गई। लाभार्थियों की आय में इस परियोजना के अन्तर्गत आने वाली कमी के मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली का बहुत कम समय के लिये उपलब्ध होना, पम्पिंग-सैटों की गुणवत्ता निम्न-स्तर की होना तथा इस परियोजना के सही संचालन का अभाव माने जा सकते हैं।

उपभोग-व्ययों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इस परियोजना में सम्मिलित सभी लाभार्थियों को उपभोग-व्ययों में 5.50% से 8.22% तक की वृद्धि हुई है। उपभोग-व्ययों में होने वाली यह वृद्धि कीमत-स्तर में वृद्धि का परिणाम है। अतः उपभोग-व्ययों में इस वृद्धि का उनके उपभोग-स्तर पर कोई अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ा।

लघु-सिंचाई परियोजना से सम्बन्धित लाभार्थियों की बचतों के विश्लेषण से यह तथ्य प्रकाश में आया कि इस परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व सभी 11 लाभार्थियों की बचत धनात्मक थी जो कि उनके परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त ऋणात्मक हो गई। इस परियोजना से जुड़े 6(54.55%) लाभार्थियों की मासिक औसत-बचतों में 217.95% की कमी, 3(27.27%) लाभार्थियों की मासिक औसत-बचतों में 272% की कमी तथा शेष 2(18.18%) लाभार्थियों की मासिक औसत-बचतों में 111.11% की कमी दर्ज की गई। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस परियोजना ने लाभार्थियों

के बचत-स्तर को बहुत बुरी तरह प्रभावित किया। लाभार्थियों की बचतों में इस विपरीत परिवर्तन का मुख्य कारण उनकी आय-स्तर में कमी एवं उपभोग-व्ययों में वृद्धि रहा है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि लघु-सिंचाई परियोजना से सम्बन्धित सभी 11(100%) लाभार्थियों का जीवन-स्तर इतनी बुरी तरह प्रभावित हुआ है कि एक ओर तो वे अपनी पूर्व आय-स्तर को भी बनाये रखने में सफल नहीं हो पाये तथा दूसरी ओर उनके उपभोग व्ययों में वृद्धि हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि इस परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व उनका जो बचत-स्तर धनात्मक स्थिति का प्रदर्शन करता था वही परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त ऋणात्मक दिशा में बढ़ता दिखाई देने लगा अर्थात् जहाँ परियोजना से जुड़ने से पूर्व उनकी ऋण-भुगतान क्षमता उनकी सम्मानजनक स्थिति का प्रदर्शन करती थी वह उनके परियोजना से जुड़ने के उपरान्त शून्य हो गई।

8.3 जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में पशुपालन परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का विश्लेषण

अग्र तालिका संख्या 8.3 में जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में पशुपालन परियोजना का लाभार्थियों की आय, उपभोग-व्यय एवं बचतों पर प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण किया गया है—

तालिका संख्या—8.3

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में पशुपालन परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन

लाभार्थियों की संख्या	आय-स्तर पर प्रभाव				उपभोग-स्तर पर प्रभाव				बचत-स्तर पर प्रभाव			
	1 (अ)	1 (ब)	1 (स)	1 (द)	2 (अ)	2 (ब)	2 (स)	2 (द)	3 (अ)	3 (ब)	3 (स)	3 (द)
8	500	788	288	57.60	723	815	92	12.72	–223	–27	196	–87.89
26	1250	1522	272	21.76	1176	1260	84	7.14	74	262	188	254.05
22	1750	1700	–50	–2.86	1672	1836	164	9.81	78	–136	–214	–274.36
12	2250	1952	–298	–13.24	2050	2260	210	10.24	200	–308	–508	–254.00
7	2750	2542	–208	–7.56	2372	2696	324	13.66	378	–154	–532	–140.74
3	3250	3042	–208	–6.40	2945	3117	172	5.84	305	–75	–380	–124.59

स्रोत—उपरोक्त तालिका जनपद मेरठ के दोनों विकास खण्डों में चयनित लाभार्थियों से किये गये साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों के आधार पर तैयार की गई है।
नोट—संकेताक्षरों का विवरण तालिका संख्या 8.1 में दिया गया है।

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्ड़ों में कुल चयनित 400 लाभार्थियों में से 78(19.5%) लाभार्थियों ने पशुपालन परियोजना में भाग लिया जिनमें से 34(43.59%) लाभार्थियों की आय में वृद्धि एवं 44(56.41%) लाभार्थियों की आय में कमी दर्ज की गई। 8 लाभार्थियों की आय में 57.60% तथा 26 लाभार्थियों की आय में 21.76% की वृद्धि हुई। ये सभी लाभार्थी निम्न आय-वर्ग से सम्बन्धित थे। निम्न आय-वर्ग के लाभार्थियों की आय में वृद्धि के मुख्य कारण उनकी आय पहले से ही काफी कम होना तथा उनका परियोजना के साथ हृदय से जुड़ना हैं। अपेक्षाकृत उच्च आय-वर्ग के लाभार्थियों की आय कम होने का मुख्य कारण कुछ लाभार्थियों द्वारा परियोजना में मिली पशु-सम्पत्ति का बेच दिया जाना तथा कुछ अन्य लाभार्थियों को निम्न-स्तर की पशु-सम्पत्ति प्राप्त होना रहा है।

पशुपालन परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के उपभोग-स्तर पर विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि सभी 78 लाभार्थियों के उपभोग व्ययों में 5.84% से 13.66% तक की वृद्धि हुई। वास्तव में, उपभोग-व्ययों में होने वाली इस वृद्धि से उनके उपभोग-स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा अपितु यह वृद्धि सामान्य कीमत-स्तर में होने वाली वृद्धि का प्रभाव-मात्र मानी जा सकती है।

पशुपालन परियोजना से सम्बन्धित लाभार्थियों की बचतों के विश्लेषण से यह तथ्य प्रकाश में आया कि इस परियोजना से जुड़े कुल 78 लाभार्थियों में से 8 लाभार्थी ऐसे पाये गये जिनकी बचत परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व —223 रुपये (ऋणात्मक) थी जो कि उनके परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त –27 (ऋणात्मक) रह गई अर्थात् इस परियोजना के परिणाम स्वरुप उनकी मासिक औसत-बचतों में 196 रुपये की वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त 26 लाभार्थियों की मासिक औसत-बचतों में 188 रुपये की वृद्धि हुई। उपरोक्त लाभार्थियों की मासिक औसत-बचतों में वृद्धि का मुख्य कारण उनकी आय में उनके उपभोग-व्ययों में वृद्धि की अपेक्षा अधिक वृद्धि होना रहा है। इसके विपरीत 44 लाभार्थी ऐसे भी मिले जिनकी बचतें परियोजना में सम्मिलित होने के पूर्व 78 रुपये से 378 रुपये के बीच थी, परन्तु इस परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् उन सभी

की बचतें –75 रुपये (ऋणात्मक) से –308 रुपये (ऋणात्मक) के बीच पहुँच गयी अर्थात् इस परियोजना के कारण उनका बचत-स्तर बुरी तरह प्रभावित हुआ जिसका मुख्य कारण उन सभी की आय में कमी तथा उपभोग-व्ययों में वृद्धि होना रहा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पशुपालतन परियोजना से जुड़े 34 लाभार्थियों ने इस परियोजना से लाभ उठाकर अपने जीवन-स्तर में वृद्धि की जबकि 44 लाभार्थियों की आय एवं बचतों पर इस परियोजना का इतना विपरीत असर हुआ कि उनकी आय भी पहले की अपेक्षा कम हो गई तथा बचतें भी धनात्मक स्तर से ऋणात्मक-स्तर में परिवर्तित हो गई। इसका प्रभाव यह हुआ कि जहाँ परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व उनकी ऋण-भुगतान क्षमता सम्मानजनक स्तर पर थी वह उनके परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् शून्य-स्तर पर आ गई। बल्कि इससे भी आगे यह कहा जा सकता है कि इस परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् उनकी आय की अपेक्षा उपभोग-व्यय अधिक हो गये जिसके कारण उन्हें अन्य ऋण-स्रोतों की शरण में जाना पड़ा।

8.4 जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में कुटीर-उद्योग परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का विश्लेषण

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में कुटीर-उद्योग परियोजना का लाभार्थियों की आय, उपभोग-व्ययों एवं बचतों पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण अग्र तालिका संख्या 8.4 में किया गया है—

तालिका संख्या—8.4

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में कुटीर-उद्योग परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन

लाभार्थियों की संख्या	आय-स्तर पर प्रभाव				उपभोग-स्तर पर प्रभाव				बचत-स्तर पर प्रभाव			
	1 (अ)	1 (ब)	1 (स)	1 (द)	2 (अ)	2 (ब)	2 (स)	2 (द)	3 (अ)	3 (ब)	3 (स)	3 (द)
5	500	912	412	82.40	723	848	125	17.29	–223	64	287	–128.70
33	1250	1716	466	37.28	1176	1351	175	14.88	74	365	291	393.24
28	1750	1737	–13	–.74	1672	1888	216	12.92	78	–151	–229	–293.59
25	2250	2277	27	1.20	2050	2308	258	12.59	200	–31	–231	–115.50
7	2750	2652	–98	–3.56	2372	2755	383	16.15	378	–103	–481	–127.25
2	3250	3086	–164	–5.05	2945	3199	254	8.62	305	–113	–418	–137.05

स्रोत—उपरोक्त तालिका जनपद मेरठ के दोनों विकास खण्ड़ों में चयनित लाभार्थियों से किये गये साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों के आधार पर तैयार की गई है।
नोट—संकेताक्षरों का विवरण तालिका संख्या 8.1 में दिया गया है।

उपरोक्त तालिका के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि इस परियोजना से जुड़े कुल 100 लाभार्थियों में से 63 लाभार्थियों की आय में वृद्धि तथा शेष 37 लाभार्थियों की आय में कमी आयी। इस परियोजना के कारण आय में वृद्धि वाले कुल लाभार्थियों में से 5 लाभार्थियों की मासिक औसत आय में 412 रुपये, 33 लाभार्थियों की मासिक औसत आय में 466 रुपये तथा 25 लाभार्थियों की मासिक औसत आय में 27 रुपये की वृद्धि हुई। आय सम्बन्धी आँकड़ों के और अधिक विश्लेषण से यह भी पता चला कि 412 रुपये से 466 रुपये तक की आय-वृद्धि निम्न आय-वर्ग के लाभार्थियों को मिली तथा जिन लाभार्थियों की मासिक औसत आय में नाम-मात्र की वृद्धि हुई वे अपेक्षाकृत उच्च आय-वर्ग से सम्बन्धित थे। कुटीर-उद्योग परियोजनाओं में इतने अधिक लाभार्थियों की आय में वृद्धि होने का मुख्य कारण लाभार्थियों को आय-प्रद रोजगार की प्राप्ति होना रहा है। इसके विपरीत जिन 37 लाभार्थियों की आय परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त कम हुई है, यह उनकी परियोजना के प्रति लगाव की कमी, परियोजना के अन्तर्गत मिली धनराशि के दुरुपयोग तथा अपात्रों को परियोजना में सम्मिलित किये जाने का परिणाम माना जा सकता है।

कुटीर-उद्योग परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के उपभोग-स्तर पर विश्लेषण करने से पता चला कि इस परियोजना से सम्बन्धित सभी 100 लाभार्थियों के उपभोग व्ययों में 8.62% से 17.29% तक की वृद्धि हुई है। यदि उपभोग-व्ययों में 10% तक की वृद्धि कीमत-स्तर बढ़ने के कारण मान ली जाये तो भी 98% लाभार्थियों के उपभोग-स्तर में वृद्धि दर्ज की गई क्योंकि इस परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त 98% लाभार्थियों के उपभोग-व्ययों में 10% से अधिक की वृद्धि हुई है।

कुटीर-उद्योग परियोजना से जुड़े लाभार्थियों की बचतों का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि इस परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् 38 लाभार्थियों की मासिक औसत-बचत में 128.70% से 393.24% तक की वृद्धि हुई तथा शेष 62 लाभार्थियों की बचतों में 115.5% से लेकर 293.59% तक का ह्रास हुआ। आगे विश्लेषण से यह भी नोट किया गया कि जिन लाभार्थियों की बचतों

में वृद्धि हुई वे सभी निम्न आय-वर्ग के थे तथा परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त उनकी आय में उपभोग-व्ययों की अपेक्षा काफी अधिक मात्रा में वृद्धि हुई। इसके विपरीत जिन लाभार्थियों की मासिक औसत-बचतों के ऋणात्मक होने की प्रवृत्ति दर्ज की गई, यह उनके परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त आय में होने वाली कमी एवं उपभोग-व्ययों में होने वाली वृद्धि की परिणति ही कहा जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कुटीर उद्योग परियोजना के अन्तर्गत 38% लाभार्थियों ने अपने वास्तविक जीवन-स्तर को ऊँचा उठाया है तथा अपनी ऋण-भुगतान क्षमता में भी वृद्धि की है। 25% लाभार्थी ऐसे रहे जिन्होंने अपनी आय में नाम-मात्र (1.2%) की वृद्धि की जबकि उनके उपभोग-व्ययों में पर्याप्त (12.59%) वृद्धि हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि जहाँ पहले उनकी मासिक औसत-बचत 200 रुपये थी, वह ऋणात्मक स्तर (–31 रुपये) पर पहुँच गई और उनकी ऋण-भुगतान क्षमता का ग्राफ शून्य पर आ गया। शेष 37% लाभार्थियों के जीवन-स्तर पर इस परियोजना का विपरीत प्रभाव ही पड़ा है क्योंकि इस परियोजना से जुड़ने के पश्चात् उनकी आय में भी कमी हुई तथा उनकी बचतें भी धनात्मक स्तर से नीचे गिरती हुई ऋणात्मक स्तर पर पहुँच गई। दूसरे शब्दों में, जहाँ इस परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व उनकी ऋण-भुगतान क्षमता सम्मानजनक स्तर पर थी वह अब न केवल शून्य हुई है अपितु उन्हें अपने दैनिक-व्ययों की पूर्ति के लिये भी महाजनों, मित्रों और सम्बन्धियों का मुँह ताकना पड़ गया।

8.5 जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में सेवा एवं व्यवसाय परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का विश्लेषण

जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में सेवा एवं व्यवसाय परियोजनाओं का लाभार्थियों की आय, उपभोग-व्ययों एवं बचतों पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण अग्र तालिका संख्या 8.5 में किया गया है—

तालिका संख्या—8.5

जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में सेवा एवं व्यवसाय परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन

लाभार्थियों की संख्या	आय-स्तर पर प्रभाव				उपभोग-स्तर पर प्रभाव				बचत-स्तर पर प्रभाव			
	1 (अ)	1 (ब)	1 (स)	1 (द)	2 (अ)	2 (ब)	2 (स)	2 (द)	3 (अ)	3 (ब)	3 (स)	3 (द)
19	500	1066	566	113.20	723	757	34	4.70	–223	309	532	–238.57
80	1250	1788	538	43.04	1176	1338	162	13.78	74	450	376	508.11
37	1750	1770	20	1.14	1672	1847	175	10.47	78	–77	–155	–198.72
29	2250	2370	120	5.33	2050	2295	245	11.95	200	75	–125	–62.50
9	2750	2782	32	1.16	2372	2728	356	15.01	378	54	–324	–85.71
4	3250	3515	265	8.15	2945	3171	226	7.67	305	344	39	12.79

स्रोत--उपरोक्त तालिका जनपद मेरठ के दोनों विकास खण्डों में चयनित लाभार्थियों से किये गये साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों के आधार पर तैयार की गई है।
नोट—संकेताक्षरों का विवरण तालिका संख्या 8.1 में दिया गया है।

उपरोक्त तालिका के अध्ययन एवं विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ऊपर वर्णित दोनों विकास खण्ड़ों में कुल 178 लाभार्थियों ने सेवा एवं व्यवसाय परियोजनाओं का चयन किया तथा सभी की आय में वृद्धि हुई। इस परियोजना के अन्तर्गत 79 लाभार्थियों की आय में 10% से भी कम की वृद्धि दर्ज की गई। 80 लाभार्थियों की आय में 43.04% तथा 19 लाभार्थियों की आय में 113.20% की वृद्धि हुई। जिन लाभार्थियों की आय में अधिक वृद्धि हुई वे निम्न आय-वर्ग वाले थे जिसका मुख्य कारण इन लाभार्थियों का परियोजना के साथ हृदय से जुड़ना माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त जिन लाभार्थियों की आय में 10% से भी कम की वृद्धि हुई वे अपेक्षाकृत उच्च आय-वर्ग से सम्बन्धित थे तथा उनकी आय में कम वृद्धि होने का कारण उनका परियोजना को सह-व्यवसाय के रूप में अपनाना रहा है।

इस परियोजना से सम्बद्ध 23 लाभार्थियों के उपभोग-व्ययों में 10% से भी कम की वृद्धि हुई तथा 37 लाभार्थियों के उपभोग-व्ययों में 10.47% की वृद्धि हुई। उपभोग-व्ययों में होने वाली इस वृद्धि को मूल्य संचकांक की वृद्धि का परिणाम ही माना जा सकता है। अत: परियोजना से जुड़े 60 लाभार्थियों के उपभोग-स्तर में कोई भी सुधार नहीं माना जा सकता। शेष 118 लाभार्थियों के उपभोग-व्ययों में 11.95% से 15.01% तक की वृद्धि इस बात की ओर संकेत करती है कि उनके उपभोग-स्तर में इस परियोजना के परिणाम स्वरुप कुछ सुधार हुआ है।

सेवा एवं व्यवसाय परियोजना से सम्बद्ध लाभार्थियों की बचत का विश्लेषण इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि निम्न आय-स्तर के 19 लाभार्थियों की बचतें जो कि औसतन रूप में पहले —223 (ऋणात्मक) थी वें उनके परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् +309 (धनात्मक) हो गई। इसी प्रकार 80 लाभार्थियों की औसत-बचतें जो कि पहले मात्र +74 रुपये (धनात्मक) थी वे उनके परियोजना से जुड़ने के पश्चात् औसतन रुप से +450 रुपये (धनात्मक) तक पहुँच गई। इसी प्रकार अपेक्षाकृत उच्च आय-वर्ग से सम्बन्धित 4 लाभार्थियों की औसत-बचत में 39 रुपये की वृद्धि दर्ज

की गई। इसके विपरीत 75 लाभार्थियों की औसत बचतों में इस परियोजना से जुड़ने के उपरान्त 62.50% से 198.72% तक की कमी नोट की गई। उनकी बचतों में इस प्रकार की कमी का मुख्य कारण उनकी आय में नाम-मात्र की वृद्धि होना तथा उपभोग-व्ययों में 10 से 15 प्रतिशत तक की वृद्धि होना रहा है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि सेवा एवं व्यवसाय से जुड़े 118 (66.29%) लाभार्थियों ने अपने जीवन-स्तर में सुधार किया तथा 103 (57.86%) लाभार्थियों ने अपनी बचतें बढ़ा कर ऋण-भुगतान क्षमता को ऊँचा किया। 37 (20.79%) लाभार्थी ऐसे पाये गये जिनकी बचतें पहले धनात्मक-स्तर पर थी परन्तु उनके परियोजना में सम्मिलित होने के पश्चात् वे ऋणात्मक-स्तर पर आ गई जिससे उनकी ऋण-भुगतान क्षमता न केवल समाप्त हुई अपितु उन्हें अपने जीवन-निर्वाह के व्ययों को पूरा करने के लिये भी अन्य ऋण-स्रोतों का सहारा लेना पड़ा।